"भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सामाजिक प्रभाव और चुनौतियों का एक अध्ययन "

Aditya Narayan, Research Scholar, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra UP-282004- India

सारांश

विश्व के अधिकतर देशों (जैसे अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, जापान, जर्मनी, सऊदी अरब आदि) ने बदलते हुए समय के साथ मानव जीवन शैली को अत्यधिक सुविधा युक्त बनाने के लिए कृत्रिम बुध्दिमत्ता का बहुत तेज गति से प्रयोग कर रहे है। भारत ने भी इस प्रकार बदलते हुए परिवेश में विश्व के साथ कदम से कदम मिलाते हुए तथा अपने लोगों की सामाजिक आर्थिक सुविधाओं तथा आवश्कताओं को ध्यान में रखते हुए कृत्रिम बुध्दिमत्ता का प्रयोग कर रहा है। भारत सरकार के अदर काम करने वाली थिंकटैंक निति आयोग ने जून 2018 में 'कृत्रिम बुध्दिमत्ता के लिए राष्टीय रणनीति' नामक एक रिपोर्ट जारी किया। जिसमें उन क्षेत्रों जैसे शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, स्मार्ट सिटीज और इनफ्रास्ट्रक्चर, स्मार्ट मोबिलिटी और ट्रांसपोर्टेशन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। जो भारत के लोगों के सामाजिक आवश्कताओं को पूर्ण करने में सक्षम हो और उन के जीवन शैली में सुधार भी हो सके। लेकिन भारत के सामने कृत्रिम बुध्दिमत्ता जैसी विनाशकारी तकनीक के सामने विभिन्न प्रकार के सामाजिक प्रभावो और चुनौतियों (नौकरियों का नुकसान और कौशल में बदलाव की समस्या, लोगों में निजता और आकड़ों को लेकर समस्या, लोगों के पास डिजिटल डिवाइस को लेकर समस्या, कृत्रिम बुध्दिमत्ता पर वित्तीय को लेकर समस्या, नैतिक और कानूनी प्रक्रिया को लेकर समस्या आदि) भी उभर कर आ रही है। इस शोध पत्र में आकडों को एकत्रित करने के लिए द्वितीय स्त्रोतों का प्रयोग, सांख्यिकीय और गुणात्मक विश्लेषण पर आधारित किया गया है। इस शोध पत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से भारत में हुए सामाजिक प्रभावों, चुनौतियों और सरकार द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर बनाई गई नीतियों का विश्लेषण किया गया है।